## Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

**Answer Script Details**
**Barcode** 11457453

**Roll No.** 24029000803
**Total Mark** 51/75.00

**Exam** MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
**Subject** A010901T - Adhunik Hindi Kavya

**Question wise Mark Summary**

| Q.No | Mark | Q.No | Mark | Q.No | Mark | Q.No | Mark |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 3/5 | | | | | | |
| 2 | 3/5 | | | | | | |
| 3 | 3/5 | | | | | | |
| 4 | 3/5 | | | | | | |
| 5 | 3/5 | | | | | | |
| 6 | 3/5 | | | | | | |
| 7 | 3/5 | | | | | | |
| 8 | 3/5 | | | | | | |
| 9 | 3/5 | | | | | | |
| 10 | 12/15 | | | | | | |
| 11 | 0/15 | | | | | | |
| 12 | 0/15 | | | | | | |
| 13 | 0/15 | | | | | | |
| 14 | 12/15 | | | | | | |
| 15 | 0/15 | | | | | | |
| 16 | 0/15 | | | | | | |
| 17 | 0/15 | | | | | | |

# Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
## Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam 11-11-2025 Shift III^rd Room No. 05
Paper Code A010901T Subject Adhunik Hindi Kavya Year/Sem. 3-Sem
Name of Candidate Ragini
Roll No. 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

Signature of Candidate: Ragini
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

| Q. | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| (a) | | | | | | | | | | |
| (b) | | | | | | | | | | |
| (c) | | | | | | | | | | |
| (d) | | | | | | | | | | |
| (e) | | | | | | | | | | |
| (f) | | | | | | | | | | |
| (g) | | | | | | | | | | |
| (h) | | | | | | | | | | |
| (i) | | | | | | | | | | |
| (j) | | | | | | | | | | |
| Total | | | | | | | | | | |

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

Paper Code: A010901T

Signature of Evaluator

PART-III

Course Master of Arts (Hindi)
Session 2025-26 Year/Semester 3^rd-Sem
Subject Adhunik Hindi Kavya

Paper Code: A 0 1 0 9 0 1 T

Exam Date: 1 1 - 1 1 - 2 0 2 5

Name of Candidate: RAGINI

Father's Name: VINDHYACHAL SHARMA

महाविद्यालय का कोड College Code: KN009

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: KN009

परीक्षा का प्रकार Type of Exam
- संस्थागत Regular ●
- भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○
- व्यक्तिगत Private ○
- बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

11457453

Paper Code: A010901T

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 5 9 1 9 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 9 0 1 T

Signature of Candidate: Ragini

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

## INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

## INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

| Correct method | Incorrect method |
|---|---|
| ① ● ③ ④ | ✓ ✗ ◉ ● |

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

## IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

## अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लाये, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

## परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

## INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex-Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

## INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 8 | 1 | 5 | 4 | 3 | 2 | 1 | 6 | 9 |

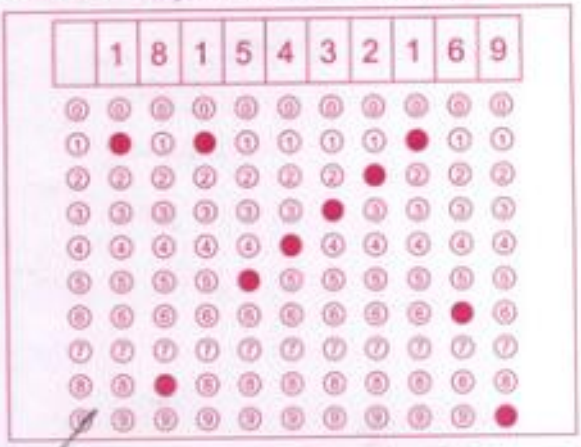



**Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns**

Paper Code A 0 1 0 9 0 1 T

01

खण्ड - अ

उत्तर संख्या - 1

'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त जी कृत रचित छायावादी युग का गौरव काव्य ग्रंथ है। मैथिलीशरण गुप्त राम ब्रह्म के उपासक कवि रहे हैं अतः उनका काव्य प्रयोजन राम के काव्य की उपस्थिति पर आश्रय रहता है। साकेत भी रामायण काव्यग्रंथ के पदचिन्हों पर लिखित ग्रंथ है। इसमें गुप्त जी ने रामायण के उपेक्षित स्त्री पात्रों का चित्रण किया तथा उन्हें काव्य की प्रतिष्ठा पर सम्मान दिलाया।

अति प्राचीन समय में अयोध्या जो कि राम की नगरी कही जाती है उसका एक नाम 'साकेत' भी है।

चूंकि मैथिलीशरण गुप्त जी ने साकेत में रामायण के उपेक्षित पात्रों की प्रबन्ध काव्य का निर्माण किया है अतः साकेत नाम गुप्त जी ने रामायण घटना के मुख्य पात्र श्री राम के जन्मभूमि साकेत के नाम पर किया है। साकेत प्राचीन महाकाव्य से उद्धृत होते हुए भी एक नवीन विचारधारा का काव्य है। इसमें गुप्त जी ने पुराने प्रसंगों के साथ साथ अपनी दार्शनिक अभिरुची तथा काव्य प्रबन्ध का भी आलोक किया है। साकेत एक युग प्रतिनिधि रचना है।

A01090IT

02

उत्तर सं०-2

कामायनी जयशंकर प्रसाद कृत रचनाओ में से काव्य कला की दृष्टि से श्रेष्ठतम रचना मानी जा सकती है। महाकाव्य के काव्य पक्ष तथा काव्य लक्षणो की दृष्टि से कामायनी एक श्रेष्ठ महाकाव्य है। कामायनी को कुल 15 सर्गों मे बांटा गया है।
जो कि एक देव मनु तथा श्रद्धा के जीवन के इर्द गिर्द घूमती रही है। कामायनी महाकाव्य का निर्माण छायावादी युग मे जयशंकर प्रसाद द्वारा किया गया था कामायनी के नायक मनु है जो कि प्रलय के बाद बचे एक मात्र मनुष्य है हिमालय क्षेत्र मे। कामायनी की नायिका श्रद्धा है जो मनु के अव्यवस्थित जीवन को व्यवस्थित करती है।

कामायनी में सर्गों की संख्या 15 है जो निम्नवत: है।

(i) चिन्ता
(ii) श्रद्धा
(iii) लज्जा
(iv) घृणा
(v) ईर्ष्या
(vi) इडा
(vii) आलस्य
(viii) क्रोध
(ix) भय
(x) उत्साह
(xi) निर्वेद
(xii) भयानक
(xiii) स्वप्न
(xiv) करुणा
(xv)

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर सं० - 3

मौन निमंत्रण कविता के रचयिता छायावाद के सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत जी है पंत जी को प्रकृति का सुकुमार कवि भी कहा जाता है क्योंकि पंत जी की काव्य चेतना का प्रमुख बिंदु प्रकृति है।
पंत जी ने स्वयं माँ में कहा है मुझे काव्य रचना करने की प्रेरणा प्रकृति से मिलती है जो कि स्वयं मेरे गाँव कूर्मांचल के वातावरण में व्याप्त है।
मौन निमंत्रण कविता में कवि को आकाश के पार अनन्त निमंत्रण का आना प्रतिबिंबित होता है।
कवि का आशय है कि जब माया रूपी जाल में उलझा ये हमारा प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक गति को छोड़ सांसारिक प्रकाश में लिप्त रहता है तब कवि को बाल बादलो के पार से एक निमंत्रण आता है जिसे कवि चकित शिशु के रूप में चकित सा देखता रह जाता है।
मौन निमंत्रण कविता में कवि संसार में लिप्त मनुष्यों को आध्यात्मिक ज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश का विचार देते हैं तथा दार्शनिक मतों से मानव जीवन को आध्यात्म से जुड़ने का आह्वान करते हैं।
मौन निमंत्रण कविता में बादलों पार से भेजा गया शांत सा निमंत्रण मानव को अपने चक्षुओं को खोल कर आध्यात्म की ओर बढ़ने का संकेत करता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 1 0 3 0 1 T



उत्तर सं० - 4

## -: लम्बी कविता :-

कविता लिखने का प्रचलन अति प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। अति प्राचीन काल से कविता को प्रसंगों तथा काव्य रचनाओं का नाम दे दिया जाता था। वाल्कि आज के युग में कविता लिखने का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। आदि काल में कविताओं की भाषा अत्यन्त क्लिष्ठ होती थी, जिससे कविता के भावार्थ बड़े कठिन ... होती थी। आज के ... छायावाद काल से ही कविता में भाषा सुगमता आ गई है। जिससे कविता का भावार्थ जन सामान्य भी आसानी से समझ सकता है। अतः कविता की भाषा में सुगमता आने से कविता में क्लिष्टता कम हो गई है जिससे कविता के क्षेत्र में अधिक विस्तार हुआ है। कविता का छोटा होना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिक लम्बी कविता का पठन पाठन बहुत कम होता है शब्दों की गहनता को देख अत्यधिक पाठकों की रुचि कम हो जाती है। काव्य रचना जितनी सुगम हो उतनी ही संक्षिप्त भी होनी चाहिए। लम्बी कविता की अवधारणा भारतेन्दु युग में व्याप्त नहीं

थी। द्विवेदी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित सरस्वती पत्रिका में अनेक कवियो की रचनाएं प्रकाशित होती थी जिनसे समकालीन कवियो का मनोबल बढ़ा तथा कवियो ने काव्य रचना में अधिक विस्तार आया।
सरस्वती पत्रिका के पश्चात कवियो ने अपने निजी लेखो को प्रकाशित कराया तथा अलग रचना करने से कवियो को जरूरतमंद स्पेस मिला तथा उन्होंने कविताओ का विस्तार करना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार छायावाद से ही लम्बी कविता का प्रचलन प्रारम्भ हुआ।

उत्तर संख्या - 5

असाध्य वीणा प्रयोगवाद तथा प्रगतिवाद के प्रवर्तक कवि अज्ञेय की कालजयी रचना है। इसका सम्पादन अज्ञेय ने विदेशी कवि की "दि बुक आफ टी" के एक खण्ड से ली है।

असाध्य वीणा शीर्षक से ही ज्ञात होता है कि इस पाठ में अज्ञेय जो बताते है यह वीणा हिमाचल में मिलने वाली एक अत्यन्त दुर्लभ लकड़ी से बनवाई गई इसे एक चाइनीज कलाकार ने बनाया तथा एक राजा द्वारा इसे बनवाया गया।

असाध्य वीणा बनवाने वाले राजा के वंश मे एक राजा ने इस वीणा को बजाने वाले

Do Not Write anything in this Portion

किल के तलाश कर रहे थे तभी एक वीणा को प्रशासक एवं 'वीणा वादक सुकुमार राजा को दरबार में लाया तथा उसने इस वीणा को साधु करने की अर्थात इस पर सुर बनाने का प्रस्ताव रखा। राजा ने वीणा वादक को बताया कि यह वीणा बहुत पुरानी है तथा अभी तक किसी ने इसे साधने में अपना योगदान नहीं दिया है। अतः इस वीणा को बजाना इतना आसान नहीं है। इस पर उस मनुष्य ने वीणा को धूलो [illegible] कर तथा विनम्रता के साथ उसे बजाने का प्रयास किया उस वीणा को बजाते जो ना बजने से सभी बहुत निराश थे अतः सब बेसब्री से उस अद्भुत वीणा से निकले स्वर को सुनने को बेताब थे। उस व्यक्ति ने प्रथम बार प्रयास किंतु वीणा नहीं बजी फिर अपने मन को एकाग्र करके अपनी साधना पर विश्वास रख उसने पुनः प्रयास कि जिससे वीणा से स्वर का गमन हुआ।

Paper Code A01D901T

07

उत्तर संख्या — 6

'अंधेरे में' कविता का शीर्षक से ही व्याप्त होता है कि कवि ने शीर्षक बहुत बुद्धिमता से चयन किया है।

'अंधेरे में' कविता के लेखक गजानन माधव मुक्तिबोध' जी है। जो एक प्रगतिवादी कवि है। मुक्तिबोध ने अपने जीवनकाल में समाज मे व्याप्त बुराइयो समस्याओ, आडम्बर तथा राजनीतिक कुरीतियो को साफ करने का अथक प्रयास किया है।

मुक्तिबोध जी ने अपनी कविता के माध्यम से यह बताया है कि किस प्रकार देश मे राजनीतिक दल पैर पसार रहे है और जनता मौन बैठी है। इस कविता पर सामाजिक परिवेश का गहरा प्रभाव पड़ा है। यह कविता द्वितीय विश्व युद्ध के तुरन्त बाद संकलित की गई थी अतः इस कविता पर युद्ध के बाद की त्रासदी, अकाल एवं सामाजिक परिस्थिति का पूरा प्रभाव नजर आ रहा है। अंधेरे मे कविता मे माधव जी दिखा रहे कि किस प्रकार कालान्तर से देश परतन्त्र है सभी व्यक्ति अपनी निरमता को दबाए जिये जा रहा है। अंधेरे मे कविता मे दर्शाया जा रहा कि किस प्रकार उच्चतम वर्ग मध्यम वर्ग को दबाता चला आ रहा है तथा उनके ऊपर अन्याय अत्याचार करता चला आ रहा है। राजनीतिक दल अन्धेरे मे उनके ऊपर करते चले

Do Not Write anything in this Portion

चले आ रहे हैं। इस प्रकार कविता पर त्रासदी के बाद के राजनीतिक खेल का वर्णन किया गया है कि देश में काल का आसार होने पर भी उच्च सेवा वर्ग भ्रष्टाचार का साथ देकर अपनी जेब भरने में लगा है तथा सामान्य जन जनसमूह में इक सभी परिस्थितियों से अनजान है। तथा अपने अधिकारों का ज्ञान न होने के कारण तमस के अंधेरे में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किये चला आ रहा है।

उत्तर संख्या – 7

अकाल और उसके बाद

'अकाल और उसके बाद' कविता बाबा नागार्जुन द्वारा रचित एक मानवता को समर्थन करने वाली कविता है। इस कविता में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुई त्रासदी से पीड़ितों का जीवन का चित्रण बाबा नागार्जुन ने अत्यन्त संवेदना व भावुकता के साथ किया है। अकाल और उसके बाद की स्थिति वर्णन करना अत्यन्त कठिन काम है उस की समकालीन

कृषि कवियो ने गली है। जिसके फल- स्वरूप बाबा नागार्जुन ने अपनी कविता में त्रासदी के बाद के किसान व मध्यम वर्ग के घरो को स्थिति का सजीव चित्रण किया है।

कई दिनों से चूल्हा रोया कई दिनो तक,
कई दिनों कानी कुतिया सोयी आय बगल में
कई दिनो तक चक्की ना चली;
कई दिनो तक छाया रहा तमस कई दिनो तक।"

इस पंक्तियो से स्पष्ट है कि अकाल के बाद कई दिनों तक दूसरे के घरो मे चूल्हा तक ना जला। कई दिनो तक रोटी देखनी नसीब ना हुई।

उत्तर सं० — 8

कुरुक्षेत्र रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित ओजपूर्ण काव्य रचना है। दिनकर जी को उत्साह एवं ओज का कवि माना जाता है। दिनकर जी ने अपने जीवन काल मे जितनी भी रचनाए लिखी उनकी सभी रचनाए ओजपूर्ण शैली मे लिखी गई है कुरुक्षेत्र मे भी ओजपूर्णता की झलक दिखने मे मिलती है। कुरुक्षेत्र शीर्षक से ज्ञात होता है कि रचना

Paper Code A 0 1 0 9 0 1 T



युद्ध कला के वर्णो का वर्णन किया गया है। दिनकर जी ने अपनी इस कविता में महाभारत के प्रसंगों के आधार पर इसकी काव्य रचना की है। तथा इसमें महाभारत काल का एक मुख्य दृष्टव्य होता है।

कुरुक्षेत्र में महाभारत काल के समय के युद्ध के एक प्रसंग की झलक है। जिसका सम्पादन दिनकर जी ने किया है। कुरुक्षेत्र यु तो महाभारत से उद्धृत है किंतु दिनकर जी ने इसे नवीन समाज के पहलुओं में रखकर देखकर अपनी दार्शनिक व अभिव्यक्ति से अपने इस काव्य में नवीन चेतना का प्रचार प्रसार किया है। दिनकर जी के काव्य में उत्साह एवं उमंग के लक्षण स्वतः ही दिख जाते है।

इस काव्य में अर्जुन से सारे महारथियों के साथ युद्ध के समय की कार्य कला पक्ष का दर्शन होता है। जिसमें अर्जुन के शौर्य के दर्शन व होते है।

Paper Code A010901HT 11

उत्तर सं 39

काव्य रचना शुरुआत से ही एक अत्यंत रोचक विषय रहा है मानव जीवन के लिए अतः काव्य रचना मे विभिन्नता लाने के लिए आधुनिक मानव ने अथक प्रयास किये है। काव्य के रूपो की व्याख्या अनेक आचार्यो ने किया है। जिसमे किसी किसी का मान्य है काव्य रचना मे लक्षण एवं अलंकारो के प्रयोग प्राचीन काल के का काव्य की प्रमुख विशेषता रही है। किन्तु जैसे जैसे कालान्तर मे काव्य रचना बढ़ती गई वैसे वैसे काव्य का परिहार भी बढ़ता गया। काव्य रचना प्राचीन समय की तरह क्लिष्ट नही रह गयी है आधुनिक युग के कवियो ने काव्य को एक नई रूप रेखा प्रदान की है जिससे अब आम जन भी काव्य के पठन मे रुचि ले रहा है।

वह काव्य जो स्वअनुभूति से लिखा जाए जिसमे लक्षण, अलंकार एवं छंदो का को नियम चाहे नो हो उसे कवि स्वयं की सम्मति से लिखे उसे मुक्त व छंद कहा जाता है

मुक्त काव्य मध्यकालीन कवियो की प्रमुख विशेषता रही है क्योंकि मध्यकाल मे ही रीतियुगो का अधिक से अधिक निर्माण हुआ है जो कि इसका अपवाद है।

Paper Code: A010 901 F



काव्य मुख्यतः तीन प्रकार का माना गया है। प्राचीन काल से ही काव्य के लक्षणों पर आचार्यों ने बहुत अधिक बल दिया है। किंतु काव्य के तीन प्रकारों में मुक्तक काव्य बहुत तेजी से आगे बढ़ा तथा उसके अन्य प्रकार निम्नवत हैं

i, प्रबंध काव्य
ii, खण्डकाव्य
iii, महाकाव्य

मुक्तक काव्य इन प्रकारों में नहीं आता है। क्योंकि मुक्तक काव्य की अपनी कोई शैली या नियम नहीं है इस प्रकार के काव्य में सब कवि के आत्म शक्ति पर निर्भर करता है वह जैसा चाहे वैसा रचे।

Paper Code A 0 1 0 9 0 1 4 T

13

खण्ड - ख

उत्तर संख्या - 10

कौन हो तुम - - - - - - - हलचल शांत

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश छायावादी युग के राष्ट्रकवि "मैथिलीशरण गुप्त" जी द्वारा रचित 'साकेत' महाकाव्य के "नवम सर्ग" से उद्धृत है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ साकेत के नवम सर्ग में उर्मिला जो कि लक्ष्मण की अर्धांगिनी है

कौन हो तुम - - - - हलचल शांत

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियां छायावाद युग के युग प्रवर्तक कवि "जयशंकर प्रसाद" जी द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य के 'श्रद्धा सर्ग' से उद्धृत है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियां प्रसाद जी ने प्रलय के बाद की स्थिति से विचलित मनु के

Do Not Write anything in this Portion

हृदय की असीम पीड़ा में श्रद्धा के आगमन से क्षणिक हर्ष तथा श्रद्धा से मनु के प्रथम वार्तालाप का प्रयोजन प्रस्तुत करता है। जहाँ मनु का सुंदर शरीर से प्रभावित श्रद्धा मनु का परिचय जानने की उत्सुक है।

व्याख्या :— प्रस्तुत पद्यांश में प्रलय के बाद मनु का अस्त व्यस्त मनु का प्रलय प्रवाह से विचलन तथा श्रद्धा से मनु का परिचय प्रसंग उल्लेखित है। मनु को मन को मग्न देखा... मनु से प्रश्न पूछती है हे मनस्वी तुम कौन हो जो इस प्रलय प्रवाह से प्रकृति में जो विरसता आ गई है उसमें अकेला यहाँ बैठ क्या निहार रहा है जिसका तन अति कोमल है इस प्राकृतिक आपदा के बाद तुम पवन के दूत की भांति प्रतीत होते हो जो इस विरान में अकेले विचरित हो रहे है।

तुम इस घोर अंधकार मय संसार में बिजली की चमकती हुई उस रेखा के समान हो जो संसार को एक समय या एक क्षण के लिए रोशनी से भर देती है।

तुम उस शीतल वायु के समान हो जो इस संसार में व्याप्त नीरसता के तपन को कम कर रही है तुम्हारे स्पर्श से हृदय में कोमलता का आह्वान हो रहा है।

Paper Code TA010901HT



इस प्रलय के बाद संसार में जीवन का अंश भी है यह मानना भी अति कठिन प्रतीत हो रहा है। तुम इस विरान संसार में मैं तुम जो पूर्णतः अंधकार मय है इसमे एक आशा की किरण के समान हो जो सम्पूर्ण विफलता के पश्चात जीवन में आशा का एक अंश का सन्चार करता है।

तुम इस हिमालय के पर्वतीय इलाके के इन चैन-चैन जवालो में व्याप्त एवं निवासित इनने भयानक जीवो के बीच तुम्हारा हृदय इतना कोमल है कि इस परिवेश में तुम्हारा होना एक आश्चर्य से कम नही है। मुख पर शोभा एवं हृदय से कोमलता की झलक साफ पड़ रही है तुम कमि की कोमल कान्ति के भाति हो जो जग शीर्ष पर शोभित करता है।

इस प्रलय प्रवाह को देखकर मनु के हृदय में कल्पना की गति इतनी तीव्र है कि उसे यह संसार बेचैन सा प्रतीत हो रहा है उसने अपने जीने की सारी आशा छोड़ दी है जो कि मानव के जीवन का आधार है।

इस परिवेश में श्रद्धा मनु के जीवन में एक दिव्य कन्या बनके आती है जो कल्पना मे डूबे मनु को कल्पना के सागर से बाहर निकालकर पुनः संसार मे प्रतिष्ठित करती है। श्रद्धा के स्पर्श को उसकी आशा की एक लहर कल्पना के असीम सागर को समाप्त कर सकता है तथा मानस के उतार चढ़ाव को भीषण लहर भी शांत कर सकता है। जो मनु को पुनः भौतिक जगत मे लौटने मे सहायता करती है।

[खण्ड - ग]

उत्तर सं. - 14

कामायनी महाकाव्य छायावादी युग का गौरव व कालजयी रचना है। जो युगों तक अपने प्रचार एवं अपने वैशिष्ट्य के कारण महाकाव्य की श्रेष्ठता की कसौटी पर खरी उतरती रही है।

कामायनी की रचना छायावादी युग मे हुई है तथा इसके महाकाव्य होने पर भी विद्वानो मे मतभेद है। कामायनी के महाकाव्य होने पर भी विद्वानो ने प्रश्न उठाये है।

कामायनी में अन्य महाकाव्यों की भाँति महाकाव्य के लक्षण देखने को मिलते है। इस मे एक नायक तथा नायिका है तथा इसमे भी अनेक रसो का समावेश हुआ है।
कामायनी मे अलंकार, छंद, रस की गहनता एवं महत्वता सम्पूर्ण दृष्टिगोचर होती है। कामायनी काल की दृष्टि से प्राचीन महाकाव्यो से अलग है किंतु इसमे महाकाव्य होने के सारे गुण विद्यमान है।
कामायनी मे अनेक रसो का अंगीरस हुआ है।

Do Not Write anything in this Portion

शृंगार रस — कामायनी में वर्णित कथानक मे कामायनी की नायिका श्रद्धा है जिसे काम की देवी की संज्ञा दी है प्रसाद जी ने स्वयं एवं मनोहारी है। कामायनी के नायक मनु एवं श्रद्धा का मिलन से ही काव्य मे श्रृंगार का प्रचुरता देखने को मिलती है जो बाद मे अनेक कारणो से टूटती बिखरती तथा पुनः अवतरित होती है।

प्रकृति का आलम्बन रूप मे प्रयोग — कामायनी मे प्राकृतिक सृजन अत्यन्त भावुकता से हुआ है तथा प्रकृति की परिस्थिति के कारण नायक का चरित्र अत्यन्त मुखर कर आता है। प्रकृति ने मनु के शारीरिक सौन्दर्य मे और प्रभाव कर दिया है मनु को देखते ही श्रद्धा उस पर मोहित हो जाती है और उसका परिचय पूछती है —

कौन हो तुम वसंत के दूत
विरस पतझड़ मे अति सुकुमार

प्रलय से मन मे नीरसता :— कामायनी के प्रारम्भिक चरण मे ही प्रसाद जी ने बड़ी सुन्दर शुरुआत करते हुए मनु की उपस्थिति को चित्रित किया है तथा संसार की कठिनाई को उद्दीप्त किया है। मनु के प्रलय प्रवाह को देखकर यह अत्यन्त

विषाद ग्रस्त हो जाता है। इस प्रकार मनु स्थिर हो जल प्रवाह को देखता है।

"अदम्य उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाह
मन में तमस की
देख रहा था प्रलय प्रवाह"

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

| A | 0 | 1 | 0 | 9 | 0 | 1 | T |
|---|---|---|---|---|---|---|---|



Do Not Write anything in this Portion

X

X

Paper Code

| A | 0 | 1 | 0 | 9 | 0 | 1 | T |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

| A | 0 | 1 | 0 | 9 | 0 | 1 | T |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

Paper Code

A 0 1 0 9 0 1 Г

Paper Code



Do Not Write anything in this Portion